

रात भर रोती हैं पत्तियाँ

पीली पत्तियों का विलाप है
रात का शोकाकुल जागरण
दिखाई नहीं देता
पर तेज़ आवाज़ में
दूर तक रास्तों पर बिखरी पत्तियों का
धीरे धीरे एक दूसरी के समीप सरकना
अपनी अपनी कहानी सुनाने के लिए...सिसकना
क्यों और कब टूटकर गिरी
बताने के लिए
रात भर रोती हैं पत्तियाँ
एकांत में...

The leaves, they wail all night

The lament of yellowed leaves
is the mournful vigil of the night.
It isn't visible.
But in sharp voices,
those leaves, scattered far along the paths,
slowly inch closer to one another
to tell their story... whimper
to say
why they broke and when they fell.
The leaves they wail all night,
alone.

पुरुष तुम

पुरुष तुम
चिंतक... दर्शक
धर्मज्ञानी ज्ञानेश्वर
तुम ज्ञाता यायावर
वैयाकरण तुम निर्णायक
भटके दूर दूर तक
समझा...
देश दुनिया का विस्तार
जाना तुमने
इतिहास भूगोल
गणित का व्यापार
जान ली मतलब की
समस्त राजनीति

आवश्यक नहीं था
तुम्हारी
विद्वत्ता की कसौटी में
जाना स्त्रीमन
इसलिए
तुम अनभिज्ञ रहे
तुम नहीं जान सके
सन्निकट मन का विज्ञान

पढ़ नहीं सके
अत्यंत समीप का मन
जननी भगिनी
भार्या का मन
जाया अनुजा
सहोदरा का मन
संगिनी अर्धांगिनी
मित्रा का मन
ममता और करुणा से
विलग रहा
तुम्हारा यायावर मन

You men

You men—
Thinkers, philosophers,
theologists, sages!
You roving experts,
makers of language, makers of decisions.
You roamed far and wide.
You interpreted
the expanse of the nations and the world.
You learned
history geography
the business of numbers.
That is to say you learned
everything there was to learn
of the political order.

You did not deem necessary,
as a measure of your erudition,
to know
the heart of a woman.
You remained ignorant,
therefore.
You could not know
the science of intimacy of minds.
You could not read
the minds closest to you —
a mother, a wife
a kin's mind,
a daughter, a sister,
a sibling's mind.
The mind of
a companion, your other half,
your friend.

Your roving mind
remained at a remove
from affection
from compassion.

मित्र

मित्रों से
सतत समृद्ध रहा मेरा कोष
ईश्वर और एकांत
को मैंने अपना
दुख और सुख सौंपकर
सृजन की सौगात ली
प्रकृति और प्रकाश से
मैंने सूरज चाँद तारों वाला
मेरे हिस्से का आकाश लिया
बादल और बरसात
उम्र भर साथ रहे
बादल
जो कभी नहीं रूठे मुझसे
न स्वभाव बदला न रंग
न शहर की भीड़ में खोए
न ठिकाना बदला
जहाँ मिले जैसे मिले
वहीं मिले वैसे ही मिले
बरसात ने मेरे उदास
मन को भिगोये रखा
हरी रखी मेरे तलवों के
नीचे की ज़मीन
जहाँ मैं निर्भर फली
मेरी मित्रता फूलों से हुई
जो हर मौसम में खिले
सुगंध बनकर
मेरी मित्रता हवाओं से रही
जिन्होंने कभी अकेला नहीं छोड़ा
मुझे
मेरा आँचल थामे
मेरे साथ साथ चली
व्योम वायु
जल अग्नि धरती से
आलिंगनबद्ध रही
मेरी जिजीविषा

Friends

My treasury has been ever abundant
with friends.

To God and solitude
I surrendered my joys and sorrows
and accepted the gift of creation.

From nature and light
I took for my share,
a sky with the sun, moon and the stars.

Clouds and rain
remained my lifelong companions.

Clouds
that never strayed from me,
that neither altered their nature nor colours,
that neither vanished in the crowd of the city,
nor changed their dwellings.

Wherever, however
I found them as they were.

The rain kept my melancholic
heart soaked
and under my feet,
the earth green.

Wherever fearless I bloomed,
I found friendship with the flowers
that blossomed each season
and transformed into fragrance.

I forged a bond with the winds
that never left me alone
but moved with me
clutching at my hem.

The universe, the winds,
the waters, fire and the earth,
held in an embrace,
my will to live.